सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 148

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 34-35
जुलाई : 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूपूर्णिमा निवेदन
गुरू के प्रति मार्गदर्शन
(परम पूजनीय दादाजी का संदेश)

गुरूबंधुभगिनियों से

मेरी (वंदनीय दादाजी) मुलाकात चलते समय बीच–बीच में आपका ध्यान घड़ी की ओर जाता है। उसी प्रकार आप बीच बीच में काया, वाचा, मन से मार्ग से दूर जाते हो।

आप, ईश्वर में जो ईश्वरीयतत्व है, उसे नही ढूंढते हो बल्कि ईश्वर आपकी मुश्किल दूर करेगा, इस अपेक्षा से उनकी तरफ देखते हो। जैसे–जैसे दिन गुजर रहे है, वैसे–वैसे आप ईश्वर से दूर होते जा रहे हो। सर्वप्रथम जिस आत्यंतिक भाव से आप बाबा के पास आए थे, वह भावना आज पूरी तरह से लुप्त हो गई है, इसका विचार क्या कभी आपने किया है?आप देवतार्जन करते हो और उस वक्त किए कार्यों के संकल्प की गिनती करते हो, गर्व से बताते हो की बारह साल शंकर जी की उपासना की है। मैं कहता हूँ की ठीक है। तुम्हारी उपासना शंकर जी को पता है, तुम्हारे परिवारजनों को भी पता है। परन्तु यह सब करते समय तुम कहाँ थे? तुम हर काम यंत्रवत कर रहे थे।

आप साईकिल पर बैठकर कही भी जाते हो, वह अपना कर्तव्य करती है। परन्तु उस साईकिल की ओर क्या आपने कभी प्यार से देखा है?अपना साईकिल के प्रति क्या कर्तव्य है यह क्या कभी आपने सोचा है? परिणाम स्वरूप किसी दिन साईकिल ही आप के ऊपर बैठती है (खराब हो जाती है) और फिर आप जाग जाते हो। घर में बिजली का बल्ब (bulb) होता है, उसका रोशनी

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

देने का काम अखंड चल रहा है। परंतु आज आपके घर आऊँगा तो, आपने बहुत दिनों से बल्ब साफ नहीं किया है, यह दिखाई देगा। रोजाना की चीजों के प्रति आप इतने गैरजिम्मेदार हो फिर ईश्वर के प्रति कितने गैरजिम्मेदार होगे? इतना सब करने के बाद आप कहते हो कि हम परमेश्वर के पास जाएंगे मगर प्राप्त जन्म में, किस की चिंता करनी चाहिए यही आपकी समझ मे नहीं आता है। इसी प्रकार आप कुलाचार, कुलधर्म करते आए हो और 12–12 साल उपासना की ऐसा बताते हो, इसका आश्चर्य होता है। आपका अपना प्रपंच उंगली जितना है (मतलब छोटा सा है) उसमें आपको खुद को सुख समाधान का अनुभव करना नहीं आता, फिर आप दूसरों को क्या दोगे?

किसी को बस का बहुत बड़ा टायर मिला परन्तु वह टायर मतलब बस नहीं है। उसी प्रकार पूजा–पाठ यह ईश्वर के पास जाने का मार्ग है, परन्तु ईश्वर नहीं। आपके घर मेहमान आते है तो आप उन्हें चाय देते हो, चाय का अर्क पानी में उतरता है और चाय कप में मेहमान को देते हो और चायपत्ती कचड़े में फेंकी जाती है। परन्तु उपासना के बारे में आप अलग बर्ताव करते हो। आपको पूजा, पाठ करके समाधान की प्रचिती का अनुभव करना है परन्तु जब ईश्वर आपके घर मेहमान बनकर आते है तब आप उन्हें चाय से छानी हुई चायपत्ती देते हो और अच्छी चाय (उपासना का समाधान) बाथरूम में फेंक देते हो। 'तत्वमसी' मतलब 'तू ही वो (परमेश्वर) है।' अंशमात्र ईश्वर की शक्ति हर किसी में होती ही हैं। परन्तु इस वाक्य का अर्थ कुछ और ही निकाला गया और आपको खुद में कुछ सुधार करना चाहिए यह आप भूल गए। मानव यह जन्मतः चालाक है। उसे इसका पूरा एहसास है मगर उस प्रकार बर्ताव करने में उसे मुश्किल होती है।

अपेक्षित सुख, समाधान का टिकट निकालकर आप ईश्वर की गाड़ी में बैठे, पूजा, पाठ के सालों की गिनती की मगर क्या आपने अपने विकारों की गिनती की है? रूमाल को साबुन लगाया तो मैल निकलता है मगर फिर से वह अपने नाक को लगाकर आप ही वह रूमाल दुबारा गंदा करते हो। तुम्हारे इस देह को बाबा के कृपाशीर्वाद का लाभ हुआ, पूजा–पाठ रूपी साबुन तुम रोजाना इस्तेमाल करते हो मगर आपके इस 'अलौकिक' जीवन के ज्ञान से क्या आपने अपने देहमाध्यम को धो दिया है? आप अपने जीवन को अभागी समझते हो, परन्तु मैं आपके जीवन को अलौकिक समझता हूँ, इसलिए मैंने जान बूझकर आपके जीवन के लिए अलौकिक शब्द इस्तेमाल किया है। आपके घर की हर बात का हिसाब होता है। पाँच सेर चीनी लाई और वह खत्म हुई तो तुरन्त और चीनी लाई जाती हैं। मतलब आपने पहले लाई चीनी का निर्णय हो गया, फिर ईश्वर को रोजाना आप आवाहन करते हो, 12–12 साल उसकी पूजा की ऐसा कहते हो तो क्या आपने इसका कभी निर्णय किया है? आप साधन को ही ईश्वर समझ बैठे हो। वास्तविक ईश्वर में जो ईश्वरीतत्व है वह समझने का साधन मतलब पूजा–पाठ और पूजा–पाठ समझने का साधन देह है।

आप पूजा–पाठ इतने सालों से धारण कर रहे हो मगर उसकी प्रतिक्रिया आपके जीवन में दिखाई नहीं देती है। आपने वूलन (गरम सूट) सूट धारण किया तो दस लोग आपकी तरफ देखते है, यह देखकर आपका अहंभाव खुश होता है। हम औरों से अलग है ऐसा आपको लगने लगता है और ऑफिस जाते ही चपरासी सलाम करता है, इतनी कोट की प्रतिक्रिया होती है तो आपमें किए पूजा, पाठ की प्रतिक्रिया भी दिखाई देनी चाहिए ना?टोपी भी सिर पर पहनो तो भी अलग–अलग प्रतिक्रिया होती है जैसे कि लाल टोपी हो तो पुलिस वाला जरूर पूछेगा कि क्या आज कहीं मोर्चा

है? काली टोपी हो तो पुलिस वाला पूछेगा, क्यों साहब, आज इधर कैसे?इस इलाके में आप कभी दिखाई नहीं देते हो। और इतना कहकर अपने साथी को धीरे से बताएगा की इन साहब पर जरा नज़र रखो व सफेद टोपी हो तो सभी सलाम करेंगे। लेकिन कोई भी टोपी हो तो भी वह पहनने वाला ईश्वर भक्त ही है ऐसा मैं कहूँगा क्योंकि मैं उसका अंतर्मन देखता हूँ और दुनिया उसके बाह्यांग देखती है इतना फर्क होता है। इससे एक बात आपके ध्यान में आएगी की हर बात को प्रतिक्रिया होती ही हैं। फिर इतने साल पूजा–पाठ धारण करने के बाद भी आप में कुछ प्रतिक्रिया क्यूँ नहीं दिखाई देती है?आपने वूलन सूट पहना है और आपके बेटे ने कुछ भी नहीं पहना है तो यह देखकर कोई भी उसे पूछेगा कि, अरे तेरे पापा तो सूट पहनते है फिर तू नंगा क्यूँ?बिल्कुल यही प्रश्न अपने इस मार्ग के लोगों को पूछा जाता है कि इतने दिनों से इस मार्ग में हो फिर ऐसे क्यूँ? सदियों से यही भावना हो गई है कि ईश्वर देता है। और उसी भावना से हर कोई एक दूसरे को मार्ग के समाधान के बारे में पूछता है। उनकी यह कल्पना है कि ईश्वर नोट बनाने की मशीन चलाता है तो पैसों की कमी हो नहीं सकती और सूट पहना तो चपरासी सलाम करेगा मगर तनख़्वा नहीं देगा। तनख़्वा मालिक ही देगा। सूट की हर कोई तारीफ करता है, इसलिए आपके काम में ढिलाई नहीं चलेगी ढिलाई हुई तो मेमो (memo) मिलेगा, वॉर्निंग मिलेगी और आखिर नौकरी से निकाला जाएगा। परन्तु आप भिखारी हो ना? चपरासी को बोलते हो मुझे सलाम किया ना, फिर दो पाँच रूपये। ऐसा यह जो आपके ऑफिस में है, उसी तरह आपका इस मार्ग में चल रहा है। सब बातें आटा पीसने जैसी। कोई भी किसी को भी आसानी से पूछता है कि ध्यान धारणा कैसे चल रही है? क्या इतनी आसानी से पूछने वाली हैं ये बातें? यह बातें ज्ञाता के लिए सहज है क्योंकि वह उसमें जो मर्म है वह जानता है।

इतना सब करके मनुश्य ईश्वर के पास जा रहा है। 'तत्वमसि' के अर्थ के अनुसार ईश्वर के तत्व का अंशमात्र तुझ में यानी मनुष्य में है, परंतु उसका लोप हुआ है इसी वजह से मनुष्य को सुख, समाधान इनकी अपेक्षा करनी पड़ती है। ईश्वर के पास सत्य है, मगर मनुष्य के अंदर का असत्य गए बिना सत्य जागृत कैसे होगा? ईश्वर के पास प्रेम है परन्तु मनुष्य हर समय दूसरों की निंदा करता है फिर उसे प्रेम की प्रचिती कैसे होगी?ईश्वर के पास समाधान है मगर खाने की थाली में गलती से भी तोरी की सब्जी डाली तो वह मनुष्य को पसंद नहीं। ईश्वर के पास समाधान है इसलिए इस दुनिया में समाधान है। आप 'शांति' यह शब्द आसानी से इस्तेमाल करते हो, परन्तु प्रथम सहनशीलता निर्माण होनी चाहिए, सुख दूसरों को दोगे परन्तु सोने से पहले मुझे दूसरों को सुख देने के लिए क्या करना होगा इसका विचार क्या कभी आपने किया है?आपके पास समझदारी नहीं है उसका विचार क्या आपने किया है?जन्म लेकर आपने क्या किया?हफ्ते में एक बार संवेदना लेने भक्त आता है, इसलिए उसकी प्यार से पूछताछ करते हो, मगर जिनके साथ रोजाना संबंध आता है, उन परिवारजनों से आपकी कितनी बनती है? घर में सबको सुख, समाधान मिलने के लिए अपना आद्य कर्तव्य क्या है, इसका विचार क्या परिवार के प्रमुख ने किया है?घर में प्रकाश देने वाला बल्ब आप साफ नही करते हो तो फिर ईश्वर स्वयं प्रकाशित दिखाई देना चाहिए ऐसी इच्छा आप क्यूँ करते हो? जिस वक्त यह 'नारायण' 'सत्य' है यह बात समझ में आएगी तब किसी कोने मे पड़े सत्यनारायण के फोटो की पूजा होगी।

संपूर्ण अस्पताल डॉक्टर नही होता है, तो सही इंजेक्शन देने वाला डॉक्टर होता है। उसी प्रकार मुलाकात याने आपके विकारों पर दिया हुआ इंजेक्शन है। ईश्वर समझने का साधन है पूजा–पाठ व पूजा–पाठ समझने का साधन है देह। जब तक ईश्वरीय तत्व, खुद में देखने का प्रयास नहीं करोगे तब तक बारह साल पूजा–पाठ करने से भी कुछ नहीं होगा। जैसे केवल सूट पहनकर बाह्यांग सजाने से, अंतरंग में लगी भूख शमन (शांत) नहीं होती, उसी प्रकार पूजा पाठ इससे युक्त ऐसा बाह्यांग सजाया तो भी जब तक अंतरंग में प्रकाश नहीं होता तब तक सब बेकार है। अंतरंग आप धारण ही नहीं करते हो। आप ने ताडपत्री का छाता खोला है और कहते हो की बरसात ही नहीं होती। ताडपत्री जितने तुम्हारे विचार दृढ़ है और वह छाता तुम्हारा संरक्षण करता है, इसलिए तुम्हें ईश्वर छाते जितना ही दिखाई देता है। परन्तु छाता बंद करके थोडा इधर–उधर देखोगे तब सब तरफ ईश्वर की कृपा की बारिश हो रही है ऐसा देखोगे। छत्र चाहिए परन्तु वह ईश्वरी कृपा का। मगर आपके सिर पर विकारों का छत्र है इसलिए आपको कालांतर के बाद भी सुख नही मिलता। कुछ लोग बारिश होने से पहले ही छाता खोलकर रखते है, इसलिए उनको वह कब बंद करना चाहिए यह भी समझ में नहीं आता। रशिया के क्रुश्चेव्ह को चिंता अमरिका की। उसका सारा ध्यान अमरिका का रेडियो क्या कहता है इस पर होता है। और उसी प्रकार प्रेसिडेन्ट केनेडी का ध्यान मॉस्को रेडियो पर होता है। दोनो ही अपने–अपने देश मे सर्वोच्च स्तर पर होकर भी सुख से नींद नहीं ले सकते क्यूँ की उन्हें चिंता एक ही बात की होती है कि उन्होंने बनाए हुए तत्व प्रतिपक्ष के तत्वों के सामने कितने टिक सकते हैं, तथा प्रतिपक्ष के तत्व अपने तत्वों के लिए मारक तो नहीं होंगे ना?आपके विचारों के और विकारों के राज्य मे यही हो रहा है।

विकारों का पतन होने के बाद विचार व विचारों के पतन के बाद ईश्वर प्राप्त होते है। मनुष्य ज्ञानी है इसलिए वह ईश्वर को विचारों से ढूंढने निकला है मगर ईश्वर उसके विचारों के भी परे है। आपकी पूजा, पाठ यह चित्रकार ने चित्रित किया हुआ एक चित्र है, मतलब प्रत्यक्ष में कुछ भी नहीं, परन्तु दुसरों को वह चित्र ही सत्य लगता है। चार बल्ब अगर इकठ्ठे किए तो कितने गुना प्रकाश मिलता है, मगर चार गुरूबंधु इकठ्ठा होने के बाद उतना गुना ज्यादा स्नेह, प्रेम दिखाई नहीं देता। आजतक आपने सब कुछ किया मगर इस मार्ग मे रहकर भी सूखे रहे। नदी में रहने वाला भी ऐसा ही सूखा रहता है, नदी के बाहर रहकर ही पानी पीना होता है।

आज हम सब परम पूजनीय बाबा के शक्ति केंद्र साई निकेतन में ''गुरुपूर्णिणा'' उत्सव मनाने के लिए उपस्थित है जो कि हर साल आती है परन्तु इस साल की आज की पूर्णिमा का शायद अनोखा मकसद हो सकता है जोकि मानव कल्याण के लिए यह अधिक महत्वपूर्ण होगी। क्योंकि अब अगली पूर्णिमा आने तक तीसरी सेमीनार हो चुकेगी। हमें पिछली या पहली सेमीनार में श्री गुरुने क्या दिया यह न सोचकर श्रद्धा के साथ गुरु आज्ञा का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि किसी कारणवश ही गुरु को सज्ञात रूप में धरती पर आना पड़ा जिसका लाभ हम दो सेमीनारों में ले चुके हैं ऐसी मेरी आप सबसे हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना है। पूरे संसार को परम पूजनीय बाबा, वंदनीय दादा, नवनाथ आदि सभी विभूतियों का इस मानव जाति को आज के दिन का अखंड आशीर्वाद।

शुभं भवतु

जनम जनम का सेवक